वाचन की आवश्यकता एवं महत्व

वाचन का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विशेष महत्व है। बिना वाचन के मनुष्य पशु के समान है। यद्यपि संकेत भी एक सम्प्रेषण का भाषा है। इसे सांकेतिक भाषा या शरीर-भाषा भी कहते हैं। जीवन के अधिकांश क्षेत्रों में वाचन का प्रयोग किया जाता है। वाचन का आवश्यकता एवं महत्व का विवेचन इस प्रकार है :—

1. वाचन व्यक्तित्व के विकास का श्रेष्ठतम साधन है। आत्म प्रकाशन मनुष्य की आवश्यकता है। अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति से मानव को सन्तुष्टि होती है।

2. दैनिक जीवन में या व्यवहार में वाचन का विशेष महत्व है, मधुर वाचन से सामाजिक क्षेत्र में स्थान बनाता है। लिखित भाषा की अपेक्षा वाचन अधिक प्रयुक्त किया जाता है।

3. लिखित भाषा को सीखने के लिए वाचन का विशेष महत्व है। अक्षरों को सीखने के लिए अक्षर की ध्वनि के उच्चारण की सहायता भी जाती है। बिना वाचन के भाषा ज्ञान अधूरा माना जाता है।

4. शिक्षा की प्रक्रिया का संचालन सभी शिक्षण स्तरों पर वाचन के माध्यम से किया जाता है।

Scanned by TapScanner

5. वाचन में हाव-भाव, स्वरों, आरोह-अवरोह, वाणी की मधुरता, शुद्ध शब्दों का उच्चारण, हाथों की गतिविधियाँ, नेत्रों की गति, मुख मुद्राओं का विशेष महत्व है। इनमें सम्प्रेषण में एक अद्भुत शक्ति, सजीवता और हृदय स्पर्शिता प्राप्त होती है।

6. वाचन आत्म: प्रकाश तथा अन्तरात्मा का उद्बोधन का साधन है।

7. जॉन डीवी - ने शिक्षा का मुख्य उद्देश्य - "सामाजिक दक्षता" माना है। यह दक्षता बहुत कुछ भावों पर विचारों के मौखिक प्रकाशन पर निर्भर है। सामाजिक स्तर पर व्यक्ति विचारों के आदान-प्रदान में जितना कुशल होगा उसमें उतनी ही सामाजिक दक्षता मानी जाती है। कुशल व्यक्ति अपनी वाणी से ही श्रोताओं को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

8. आज का युग विज्ञान तथा तकनीकी का युग है। सभी क्षेत्रों में प्रचार एवं प्रसार की आवश्यकता है। वक्ता माध्यम के प्रयोग से कहीं भी पहुँच सकता है। दूरवर्ती शिक्षा में माध्यमों की सहायता से आज शिक्षा दी जाने लगी है। वाचन में इसका विशेष महत्व है। अच्छे वक्ता अथवा शिक्षा का माध्यमों से सभी को लाभ दिया जा सकता है।

Scanned by TapScanner